# टालस्टॉय की

## अमर बाल कहानियां

## भाग - 2

# टालस्टॉय

# की

# अमर बाल कहानियाँ

भाग–2

लेव टालस्टॉय

भारत ज्ञान विज्ञान प्रकाशन, दिल्ली–110032

# टालस्टॉय 1828-1910

विश्व कथा साहित्य में टालस्टॉय का नाम प्रथम श्रेणी के रचनाकारों में आता है। इनकी रचनाएं समकालीन समाज का दर्पण हैं। बच्चों के लिये भी इन्होंने बाल मन की जिज्ञासा को सामने रखते हुए अनेक कहानियों की रचना की है जिनका विश्व ललित् साहित्य के अमर कोष में विशेष स्थान है। इन्हीं कहानियों में से कुछ का संकलन कर आपके सामने प्रस्तुत कर रहें हैं। यह रचनाऐं एक दर्पण की तरह है जिसमें छोटा सा बालक या एक प्रौढ व्यक्ति भी अपनी छवि खोज निकालता है कहानी में प्रश्न उत्पन्न करना फिर उसका सरस शैली में उत्तर देना इन रचनाओं की विशेषता है। इन कहानियों के पात्रों का भारतीयकरण किया गया है परन्तु कहानी की मूल कथा में कोई परिवर्तन नहीं है। आशा है कि इन रचनाओं का पहला संकलन जो कि तीन भाग में प्रस्तुत कर रहें हैं आपको पसंद आएगा।

प्रकाशकीय

# अनुक्रम


| | |
|---|---|
| लड़की और शहतूत | 5 |
| हाथी | 9 |
| दो दोस्त | 11 |
| चिड़िया | 13 |
| सिंह और कुत्ता | 17 |

# लड़की और शहतूत

दो लड़कियां जंगल से शहतूत बटोरकर घर लौट रही थीं।

उनके रास्ते में रेलवे लाइन आती थी।

उन्होंने सोचा कि गाड़ी अभी दूर है, इसलिए वे पुश्ते पर चढ़कर रेल की पटरी लांघने लगीं।

अचानक उन्हें इंजन का शोर सुनाई दिया। बड़ी लड़की वापस भाग गई, मगर छोटी रेलवे लाइन लांघ दूसरी तरफ पहुंच गई।

बड़ी लड़की ने चिल्लाकर अपनी बहन से कहा—

"वापस मत आना!"

मगर इंजन नजदीक आ गया था और इतना शोर मचा रहा था कि छोटी लड़की अपनी बड़ी बहन की बात साफ़-साफ़ नहीं सुन पाई। उसने सोचा कि उसे वापस भाग आने को कहा गया है। वह पटरी को लांघती हुई वापस भाग चली, उसने ठोकर खाई और उसकी इकट्ठी की हुई सारी शहतूत बिखर गईं। वह शहतूत समेटने लगी।

इंजन नज़दीक आ चुका था।

ड्राइवर ने पूरे ज़ोर से सीटी बजाई।

बड़ी बहन चिल्लाई—"शहतूत यहां पड़ी रहने दो!" मगर छोटी लड़की को लगा कि उसे शहतूत समेटने के लिए कहा गया है। वह पटरियों के बीच रेंगती हुई शहतूत समेटने लगी।

ड्राइवर के लिए गाड़ी रोकना असम्भव था। इंजन ने एक बार फिर पूरे ज़ोर से सीटी बजाई और गाड़ी लड़की के ऊपर से गुज़र गई।

बड़ी लड़की चीख उठी और बिलख-बिलखकर रोने लगी। सभी मुसाफिर खिड़कियों में से झांक रहे थे और गार्ड यह देखने के लिए भागता हुआ गाड़ी के आखिरी सिरे पर जा पहुंचा कि लड़की का क्या हुआ।

गाड़ी जब गुज़र गई तो सभी ने देखा कि लड़की सिर नीचे की ओर सटाए हुए, हिले-डुले बिना पटरियों के बीच लेटी हुई है।

बाद में जब गाड़ी बहुत दूर चली गई तो लड़की ने सिर ऊपर उठाया, उठकर खड़ी हुई, उसने सारी शहतूत इकट्ठी कीं और बहन के पास भाग गई।

# हाथी

शंकर के पास एक हाथी था। शंकर उसे खिलाता-पिलाता बहुत थोड़ा और काम लेता बहुत ज्यादा। हाथी को एक दिन गुस्सा आ गया और उसने शंकर को अपने पैर तले रौंद डाला। शंकर मर गया। शंकर की पत्नी रोने लगी और उसने अपने बच्चों को हाथी के पैरों के पास गिराकर कहा—"तुमने इनके पिता की जान ली है। अब इन्हें भी मार डालो।" हाथी ने बच्चों की ओर देखा, सबसे बड़े बालक को सूंड़ में लपेटा और बहुत धीरे से अपनी गर्दन पर बिठा दिया। इसके पश्चात् लड़के का हुक्म मानने और उसके लिए काम करने लगा।

# दो दोस्त

एक बार दो दोस्त जंगल में से जा रहे थे। अचानक एक भालू उनकी ओर झपटा। उनमें से एक भागकर निकट के वृक्ष पर चढ़कर छिप गया, मगर दूसरा वहीं पर खड़ा रह गया। वह करता भी तो क्या? मुर्दा बनकर ज़मीन पर लेट गया।

भालू उसके पास आकर उसे सूंघने लगा। उस व्यक्ति ने अपनी सांस रोक ली।

भालू ने उसका मुंह सूंघा और उसे मुर्दा समझकर वहां से हट गया।

भालू जब चला गया तो उसका मित्र हंसता हुआ वृक्ष से नीचे उतरा। उसने पूछा—

"क्यों भाई, भालू ने क्या कहा तुम्हारे कान में?"

"उसने कहा कि वे लोग बहुत बुरे होते हैं जो खतरे के वक्त अपने दोस्त को अकेला छोड़कर भाग जाते हैं।"

# चिड़िया

मनोज को उसके जन्म-दिन पर बहुत-से उपहार मिले—खिलौने, भेड़िये, घोड़े और चित्र। मगर मनोज को सब से अच्छा उपहार दिया उसके चाचा ने—पक्षी फंसाने का जाल। जाल इस तरह से बना हुआ था—एक चौखटे के बीच में जाल के साथ एक छोटा-सा तख्ता जुड़ा हुआ था। इस छोटे-से तख्ते पर कुछ दाने रखकर उसे आंगन में रख दिया जाता था। जैसे ही कोई पक्षी तख्ते पर बैठता, तख्ता उलटता और जाल ऊपर से अपने आप बन्द हो जाता। मनोज यह उपहार पाकर बेहद खुश हुआ और मां को दिखाने भाग गया।

"यह तो अच्छा खिलौना नहीं है। तुम्हें क्या करना है पक्षियों का? उन्हें कैद कर रखने में तुम्हें क्या मिलेगा?"

"मैं उन्हें पिंजरे में रखूंगा। वे गायेंगे और चहचहायेंगे और मैं उन्हें दाना-दुनका भी खिलाऊंगा।"

मनोज दाने लाया, उन्हें तख्ते पर बिखराकर उसने जाल को बगीचे में रख दिया। वह इस इन्तज़ार में खड़ा रहा कि कब पक्षी उसके जाल में फंसते हैं। मगर पक्षी उससे डरते रहे और जाल के पास नहीं फटके। मनोज जाल को वहीं छोड़कर खाना खाने चला गया। खाना खाकर जब वह लौटा तो जाल को बन्द पाया। उसके नीचे एक पक्षी फड़फड़ा रहा था। मनोज बहुत खुश हुआ, पक्षी को पकड़कर घर ले गया।

"मां, देखो तो मैंने पक्षी पकड़ लिया। शायद यह बुलबुल है। देखो, इसका दिल कैसे धड़क रहा है!"

मां ने कहा—

"यह बुलबुल नहीं, चिड़िया है। देखो, इसे तंग नहीं करना। बेहतर यह है कि तुम इसे छोड़ दो।"

"नहीं, मैं इसे अच्छी तरह खिलाऊं-पिलाऊंगा।"

मनोज ने चिड़िया को पिंजरे में बन्द कर दिया। दो दिन तक उसने उसे अच्छी तरह दाना-पानी दिया और पिंजरा भी साफ़ किया। तीसरे दिन वह चिड़िया को भूल गया और उसके पीने का पानी नहीं बदला। मां ने कहा—

"देखो, भूल गये न चिड़िया को! बेहतर यही है कि उसे उड़ा दो।"

"नहीं, मैं अब नहीं भूलूंगा। अभी पानी रख देता हूं और पिंजरा साफ़ करता हूं।"

मनोज पिंजरे में हाथ डालकर उसे साफ़ करने लगा और चिड़िया डरती हुई इधर-उधर पिंजरे से पंख टकराने लगी। मनोज पिंजरा साफ़ करके पानी लाने गया। मां ने देखा कि वह पिंजरे का दरवाज़ा बन्द करना भूल गया

है। उसने पुकारकर कहा—

"मनोज, पिंजरे का दरवाज़ा बन्द कर दो, वरना तेरी चिड़िया कमरे दीवारों से टकराकर मर जायेगी।"

मां इतना कह न पाई थी कि चिड़िया को दरवाज़ा खुला मिल गया। बहुत खुश हुई, उसने छोटे-छोटे पंख फैलाए और कमरे को लांघती खिड़की की तरफ़ उड़ चली। हां, खिड़की के बन्द शीशे पर उसकी न नहीं पड़ी। वह शीशे से ज़ोर से टकराई और नीचे गिर पड़ी।

मनोज भागकर गया, उसने चिड़िया को उठाया और फिर से पिंजरे में लाकर डाल दिया। चिड़िया अभी ज़िन्दा थी, मगर छातीं के बल पड़ी थी। उसके पंख फैले हुए थे और वह मुश्किल से सांस ले रही थी। मनोज उसे देखता रहा, देखता रहा और फिर रोने लगा।

"मां, अब मैं क्या करूं?"

"अब तुम्हारे करने से कुछ नहीं होगा।"

मनोज दिनभर पिंजरे के पास बैठा रहा, चिड़िया को ही देखता रहा। चिड़िया उसी तरह छाती के बल पड़ी रही, गहरी और तेज़ सासें लेती रही। मनोज जब सोने के लिए बिस्तर पर लेटा तब तक जाकर चिड़िया जिन्दा थी। मनोज को बहुत देर तक नींद नहीं आई। जैसे ही वह आंख मूंदता, वैसे ही छाती के बल पड़ी हुई गहरी सांसें लेनेवाली चिड़िया की तस्वीर उसकी आंखों के सामने घूम जाती। सुबह को जब मनोज पिंजरे के पास गया तो उसने देखा कि चिड़िया पीठ के बल पड़ी है और छोटे-छोटे पंजे उसके अकड़े हुए जिस्म के साथ चिपके हुए हैं। इसके बाद मनोज ने कभी परिन्दे नहीं पकड़े।

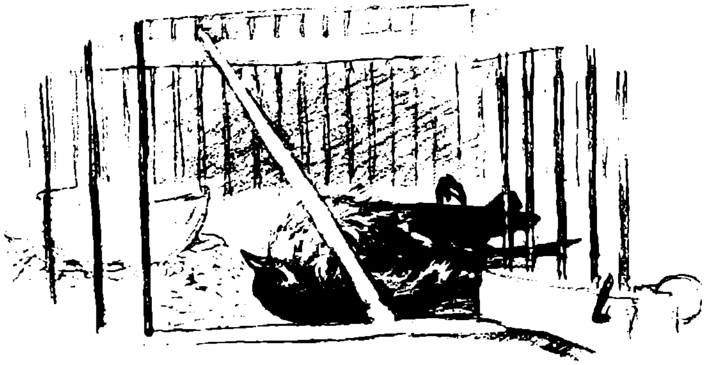

# सिंह और कुत्ता

एक बार लन्दन में जंगली जानवरों का प्रदर्शन किया जा रहा था। उन्हें देखने के लिए दर्शकों को पैसे देने पड़ते थे या बिल्लियां और कुत्ते लाने होते थे जो जंगली जानवरों को खिलाये जाते थे।

एक आदमी का जंगली जानवर देखने को मन हुआ। उसने गली में से एक कुत्ता पकड़ लिया और उसे लेकर जानवरों के मालिक के पास पहुंचा। इस आदमी को जानवर देखने की इजाजत दे दी गई और कुत्ते को सिंह के पिंजरे में फेंक दिया गया।

इस छोटे-से कुत्ते ने टांगों के बीच दुम दबाई और पिंजरे के एक कोने में दुबक कर बैठ गया। सिंह उसके पास आया और उसने कुत्ते को सूंघा।

कुत्ता पीठ के बल लेट गया, पंजे ऊपर की ओर उठा लिये और दुम हिलाने लगा।

सिंह ने उसे अपने पंजे से छुआ और उलट दिया।

छोटा-सा कुत्ता उछलकर खड़ा हुआ और अपनी पिछली टांगों के बल सिंह के सामने बैठ गया।

सिंह इस छोटे-से कुत्ते को ध्यान से देखता रहा, उसने दायें-बायें अपना सिर हिलाया, मगर कुत्ते को नहीं छुआ।

जंगली जानवरों के मालिक ने जब सिंह के पिंजरे में मांस फेंका तो सिंह ने उसमें से एक टुकड़ा काट लिया और बाकी कुत्ते के लिए छोड़ दिया।

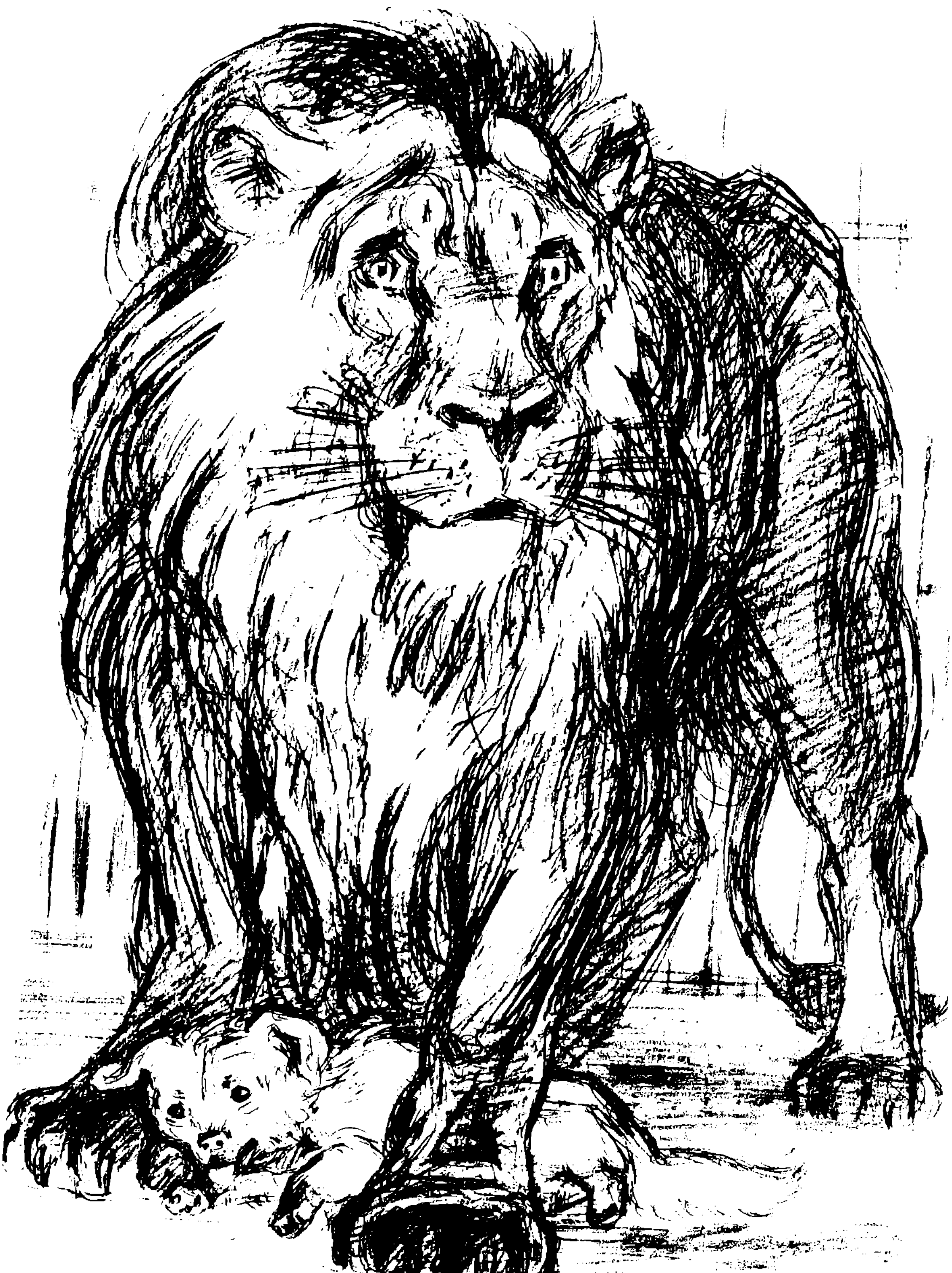

शाम हुई तो सिंह सोने के लिए लेट गया। कुत्ता भी सिंह के करीब ही लेट गया और उसने अपना सिर सिंह के पंजे पर रख दिया।

उस दिन से वह छोटा-सा कुत्ता एक ही पिंजरे में सिंह के साथ रहने लगा। सिंह ने कभी भी उसे किसी तरह की हानि नहीं पहुंचाई। वह मालिक द्वारा दिया जानेवाला मांस खाता, कुत्ते के साथ ही सोता और कभी-कभार उसके साथ खेलता भी।

एक दिन एक रईस जंगली जानवरों को देखने आया। उसने अपना कुत्ता पहचान लिया। उसने जानवरों के मालिक से कहा कि कुत्ता उसका है और अनुरोध किया कि वह उसे लौटा दिया जाये। मालिक ने कुत्ता लौटाना चाहा, मगर जैसे ही कुत्ते को पिंजरे से बाहर निकालने के लिए उसे बुलाया जाने लगा कि सिंह की गर्दन गुस्से से तन गई और वह गरजने लगा।

इस तरह वह छोटा-सा कुत्ता और सिंह साल भर एक ही पिंजरे में रहे।

एक साल के बाद कुत्ता बीमार हुआ और मर गया। सिंह ने खाना-पीना छोड़ दिया, कुत्ते को सूंघता, चाटता और पंजे से हिलाता-डुलाता रहा।

सिंह जब यह समझ गया कि कुत्ता मर चुका है तो वह अचानक उछलकर खड़ा हुआ, उसके अयाल तन गये, वह अपनी दुम को अगल-बगल मारने लगा, बार-बार पिंजरे की सलाखों से टकराने और फ़र्श को नोचने लगा।

सिंह दिनभर पिंजरे की सलाखों से इधर-उधर टकराता, छटपटाता और गरजता-तड़पता रहा। फिर वह मृत कुत्ते के पास जाकर पड़ रहा और चुप हो गया। मालिक ने मरे हुए कुत्ते को वहां से हटाना चाहा। मगर सिंह ने

किसी को उसके पास भी फटकने नहीं दिया।

मालिक ने सोचा कि अगर सिंह को दूसरा कुत्ता दे दिया जाये तो वह अपना दुःख भूल जायेगा। उसने एक जिन्दा कुत्ता पिंजरे में छोड़ दिया। मगर सिंह ने फौरन ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। फिर वह मृत कुत्ते का अपने पंजों से आलिंगन करके उसी तरह पांच दिनों तक पड़ा रहा।

छठे दिन सिंह मर गया।

# टालस्टॉय की

# अमर बाल कहानियां